ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 2 January–December 2020

संत रविदास का समाजिक चिंतन

शिव कुमार बंजारे

सहायक प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष हिंदी

शा.नवीन महाविद्यालय नवागढ़ जिला–जांजगीर चांपा छ.ग.

मो. 7999665278 ई.मेल – s.k.banjare85@gmail.com

उद्देश्य / प्रस्तावना –

हिन्दी साहित्य में संत साहित्य का विषेष स्थान है। संत समन्वयवादी है क्योंकि जीवन की पूर्णता संतुलन में है, समन्वय में है। संत रविदास ऐसे ही संत है जो सरल, सहज मृदुभाषी, भक्तिभावना से पूर्ण, साधनापरक विचारो से ओतप्रोत समाज सुधारक थे। संत रविदास ने अपने विचारों से समाज को नई दिशा में मोड़ कर नई राह दिखाने का सफल प्रयास किया। संत रविदास समाजिक विकास के उद्देश्य से प्रेरित थे। इनकी रचना सरल भाषा में लिखा गया है। जो समाज के सभी लोग आसानी से समझ सके। इस लेख में संत रविदास के समाजिक चिंतन को समझने का प्रयत्न किया गया है। क्योंकि तत्कालीन परिवेश को संत रविदास जी ने प्रभावित किया है और युग परिवर्तक के रूप में कार्य किया है।

विस्तार –

संत रविदास के जन्म पूर्व भारत के इतिहास में प्रकाश डाला जाए तो यहां की भूमि पर अनेक आक्रांता शक, हूण, मुगल से लेकर अंग्रेज तक यहां आये जिससे यहाँ की जन–जीवन में संस्कृति फल–फूल गई जो भारत की उदार संस्कृति के रूप दिखाई देता है। लेकिन धर्म के ठेकेदारों ने साम्प्रदायिकता, जातिवाद, धर्मवाद फैलाकर लोगों के बीच में समाजिक असमानता, फैलाकर चले गये और लोगो की बीच दूरियां बढ़ती गई। तब संतो ने इस दूरियो को समाप्त करने का प्रयत्न किया तथा लोगों के भड़के हुए भावना को दूर करने की कोशिश किया । "उनको शान्त करने के लिए गुरू रविदास जी के विनम्रतापूर्वक संदेश ने जलधारा का काम किया। गुरू रविदास का यह प्रयत्न एक अनूठा उपक्रम था जिसमें से भिन्न–भिन्न संस्कृतियों को मिलाने की चेष्ठा थी जिसमें मानवतावाद का स्वर मुखर था।" 1 हिन्दी साहित्य में भक्तिकाल को स्वर्णकाल कहा जाता है। लेकिन तत्कालीन भारतीय परिवेश में समाजिक भेदभाव भी बढ़ रहा था जो जातीय संघर्ष को बढ़ावा दे रहे थे। बुद्धि जीवी लोगों के लिए यह चिंतनषील था। " चर्मकार के घर जन्म लेने वाले रविदास जी ने तत्कालीन घोर सामजिक भेदभाव को अपनी कठोर वाणी से ध्वंस करने का जो प्रशंसनीय कार्य किया वह उनके कृतित्व की धरोहर है।" 2 संत रविदास के संबंध में अनेक लोगों ने अलग–अलग विचार दिये है।

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 2 January–December 2020

जिसमें उनके जन्म से सम्बंधित चमत्कारिक घटनाओं का भी वर्णन किया जाता है। वे सभी मान्य नहीं है। "वे रामानन्द के शिष्य और कबीर के समकालीन थे। अतः इनका आर्विभाव काल कबीर के समय में ही मानना चाहिए, जो संन् 1445 से 1475 है। वे काशी के निवासी थे। अपने जाति के बारे में यह पंक्ति कहते थे–

ऐसी मेरी जाति विख्यात चमार।

हद्य राम गोविन्द गुन सार।। 3

रविदास की वाणी

संत रविदास जी लोकमंगल की भावना को अधिक महत्व दिये है। जो कि संत साहित्य का सहज अनुभव था। संत रविदास सामान्यतः समाज के निम्न वर्गो में आर्विभूत हुए थे। इसलिए अपने साहित्य साधना अपने कर्मफल से समाजिक सुधार की ओर बढ़े। संत साहित्यकारों का मुख्य ध्येय साहित्य साधना न होकर समाजिक सेवा था। संत रविदास की रचनाएं भी समाज सेवा का भाव लिये हुए है। संत रविदास की व्यक्तित्व और कृतित्व दोनो उनकी वाणीयों से देखा जा सकता है। उनकी रचनाओं को संगृहित करके बाद में प्रकाशित कराया गया उनकी कोई रचना नही माना जाता है। उन्होंने अपने बारे में ज्यादा कुछ नहीं लिखा है। संत परम्परा में रविदास का विशेष स्थान रहा है। उनकी रचनाओं में केवल उपदेशात्मक वाणीयाँ ही नही है अपितु समाजिक मध्यस्थता का स्वरूप भी है। समन्वय का भाव है। रविदास अस्पृष्यता, जातिवाद, वर्ण–व्यवस्था जैसे समाजिक बुराईयों का विरोध कर एकात्मक भाव के लिए सहज, सरल , साहित्य साधना को अनुसरण कर लोगों के बीच आया है। उन्होंने अपने सांस्कृतिक चेतना के बल पर जातीय स्वर को समाप्त करने का प्रयास किया । वे जनता के मनोभाव उनकी दशा, उनकी समस्या से अवगत थे जो वर्ण–व्यवस्था के कारण उन्हें कष्ट पहुँचाते थे।

"जात–पांत के फेर महि, उरभि रहत सभ लोग।

मानुषता कू खाततई, रविदास जात रोग।।"

रविदास की साखी 186

इस प्रकार रविदास ने जाति–व्यवस्था का खुलकर विरोध किया। इनके पीछे उन्होंने लेागों की मुर्खता, अज्ञानता को कारण माना। अपने को कुलीन, उच्च वर्ग होने पर गर्व करने वालों को भी रविदास ने फटकारा है –

ऊँचे कुल के कारने, ब्राम्हण कोय न होय।

जऊ जानहि ब्रम्हा आत्मा, 'रविदास' ब्रम्हान होय।।

इस प्रकार रविदास ने हिन्दू वर्ण–व्यवस्था का डटकर विरोध किया है। उन्होंने कर्म को महत्व दिया है। और समाजिक चेतना पक्ष को जागृत करने का कार्य किया है। संत रविदास ने धार्मिक कर्मकाण्ड का विरोध किया है। मध्यकाल के सभी संतो ने धार्मिक कर्मकाण्ड, पाखण्डवाद

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 2 January–December 2020

का खुलकर और मुखर होकर खण्डन किया है संत साहित्य में धार्मिकता और धर्म पर लगभग संभी संतो ने अपनी लेखनी चलाई और धार्मिकता, धर्म का स्वरूप बदलने का प्रयास किया है। संत रविदास ने भी "मूर्तिपूजा और तीर्थव्रत" का विरोध किया है। गुरूरविदास के समय पूरा जोर था इनके एक ओर भ्रम का आधार था तो दूसरी ओर भेदभाव का प्रचार था। जप–तप, तीर्थ एवं व्रत में केवल अंधविश्वास देखकर उन्हें कहना पड़ा था –

भगति ऐसी सुनहु रे भाई। आई भगति तब बड़ाई

कहा भयै नार्च अनु गाए, कहा भयै तप की है।

कहा मयै जे चरण पखारे, जौ लौ परमतत्व नाहि पी है।

कहा भयै जे मूण्ड मुड़ायौ, बहु तीरथ व्रत की है।। 4

"तत्कालीन धर्म के मतभेद और बाह्य आडम्बर का संत रविदास जी ने विरोध किया है। उन्हें तीर्थ–स्नान वेद–पाठ, छुआ–छुत, रोजा–नमाज, हिन्दू–मूसलमान, मन्दिर–मस्जिद, ब्राम्हण–शुद्र आदि का भेद मान्य नहीं है बल्कि इन सबका कठोर विरोध किया है। "5

पांडे कैसी पूजि रची रे।

सलि वो है सोई सन्तिवादी झूठी बात बनी रे।।

संत रविदास धार्मिक एकता के पक्षधर थे उन्होंने मंदिर–मस्जिद दोनों को समान माना है।

मंदिर मसजिद दोउ एक है, इन मेह अंतर नाहि।

'रविदास' राम रहमान का, झगडउ कोहु नाहि।।

पद – 144

"रैदास अपनी रचनाओं में शांत, सौम्य, निस्पृह एवं दीन–हीन दिखाई पड़ते है, रविदास की रचनाओं में प्रेममन की निर्मलता पारस्परिक व्यवहार की सहजता, ईश्वर की शरणागति परमात्मा के सम्मुख दैय निवेदन प्रमुख है।" 6 इसके बाद भी संत रविदास की रचनाओं में असीम करूणा मानवीय समता का उदघोष होता है। मानवता हृय में सबसे बड़ी विशेषता है। साहित्य साधना का लक्ष्य समतामूलक मानवतावादी समाज का निर्माण करना । देखा जाये तो संतो की वाणी में सर्वत्र लोक कल्याणकारी भाव देखने को मिलता है।

"सब सुख पावै जासु, सो हरि जु को दास।

कोम दुख पावै जासू ते, सो न दास हरिदास।।"

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 2 January–December 2020

संत रविदास ने अपने समय की समाजिक परिस्थितियों का आत्मसात किया और उन परिस्थितियों पर विजय प्राप्ति हेतु एक स्वस्थ दृष्टिकोण या जीवन दृष्टि प्रस्तुत की ।" 7 तात्कालिक समाजिक व्यवस्था की विविध प्रतिकुल परिस्थितियों के बावजूद संत रविदास की दृष्टि समतावादी थी।

"कृष्ण करीम राम हरिराघव, जब एक न पेषा।

वेद कूसेब पुरानन,सहज एक करि भेषा।।"

संत रविदास ने समाज की पीड़ा को व्यवहारिक रूप से समझकर उनका समाधान के लिए अपनी सझी हुई वाणी से समाधान को सामान्य जनताओं तक पहुंचाने के लिए कार्य किया। संत रविदास की दृष्टिकोण व्यापक थी उनकी वाणी आज भी उतनी हि प्रासंगिक है जितना तत्कालीन समय में थी। विशाल भारतीय संस्कृति में विश्व बन्धुत्व की भावना, जन–कल्याण, मानवता सभी संतो की वाणी में पाया जाता है। यही भाव संत रविदास की वाणी में भी है। रविदास जी ने मूर्तिपूजा का भी विरोध किया है। वे कहते है–

"माथै तिलक हाथ जप माला, जग ठगने स्वांग बना

मरग छाड़ि कुमारग एक डहकै, साची प्रीत बिनु राम न पाया।।"

इस प्रकार रविदास ने कहा है कि राम मंदिर में पूजा करने से मिलता है और न खुदा मस्जिद में जाकर मिलता है मै तो वहीं झुकता हूँ जहां परमेष्वर का वास हो और भगवान (परमेष्वर) तो हर जगह है।

"रविदास न पुजइ देहरा, अस न मसजिद जाय।

जंह तंह ईस का बास है, तंह तंह सीस नवाय।।"

संत रविदास जी ने तत्कालीन समाज में व्याप्त मूर्ति–पूजा का विरोध किया है। मूर्ति–पूजा से परमात्मा की प्राप्ति असम्भव है। परमात्मा प्राप्ति के लिए लोगों ने जो माथे पर तिलक लगाना, हाथ में जपमाला धारण करना, यह सब जगत को ठगने का कार्य है। एवं स्वांग है।" 8 "धार्मिक दृष्टि से सर्वधर्म समन्वय का सार तत्व ही वास्तव में संत मत है। इतना होते हुए भी इसका अपना स्वतंत्र स्वरूप और व्यक्तित्व है। यह मत सब प्रकार के बंधनों और भेद–भावों से ऊपर उठकर विश्वबंधुत्व और मातृत्व की प्रेरणा देता है। अतः इसका धर्म अपनी व्यापकता में सामान्यतः विश्व मानव धर्म है।"9 सभी निर्गुण संतो ने मूर्तिपूजा का विरोध किया है। मूर्तिपूजा लोगों को उनकी सच्ची भक्ति और ईश्वर के स्वरूप से दूर ले जाता है। संत रविदास ने मूर्तिपूजा का विरोध किया है। निर्गुण संतो ने अवतारवाद, बहुदेववाद आदि का विरोध किया है। जिसमें संत रविदास का विशेष योगदान है। वे कहते है–

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 2 January–December 2020

"हरि सा हीरा छाड़ि कै, करै आन की आस।

ते नर जमपुर जाहिगे, सत भाषै 'रविदास।।'

मानव जीवन दुर्लभ है बार –बार मानव जन्म प्राप्त नहीं होता है। इस सत्य के साथ अवतारवाद एवं बहुदेववाद का विरोध किया है। " 10 रविदास कहते है "ब्रम्ह पूर्ण रूप है प्रत्येक स्थान पर प्राप्य है। वह अत्यंन्त सुक्ष्म है किन्तु उसमें ही इस सृष्टि की अकथनीय प्रक्रिया का विस्तार होता है। इसलिए गुरूरविदास जी कहते है –

बटक बीज जैसा औकार, पसरयो तीन लोक विस्तार।

जहाँ का उपज्या तहाॅ संमाय, सहजषून्य में रहो लुकाय।।" 11

निर्गुण ब्रम्ह को सर्वव्यापक बताया है और उसे ही सम्पूर्ण जग का कर्ता–धर्ता कहा है उन्होंने ईश्वर के अवतारवाद का विरोध किया है वे ब्रम्ह को सत्य ज्योति कहने की चेष्ठा करते है, और उनकी ही उपासना करते है। संत रविदास जी की दर्शन अदैवतवाद है। वे ब्रम्ह और जीवात्मा में कोई भेद नहीं मानते है। वे ब्रम्ह को स्वयं के भीतर खोजते है, न की सर्वत्र वे निर्गुण निराकार है जिनका कोई आदि है और न ही अंत है जो–

निश्चल, निराकार, अति अनुपम, निरभै गति गोविन्द।

अगम, अगोचर, अक्षर अतरक, निर्गुण अति आनन्द।।

इन्होने सम्पूर्ण जीवन एक ही राम की उपासना की है जो दशरत पुत्र राम न होकर सर्वव्यापी है। तत्कालीन समय में लोग तीर्थ यात्रा अधिक किया करते थे। जिसके सम्बंध में रविदास कहते है–

तीरथ बरत न करौ अंदेसा

तुम्हरे चरन कमल का भरोसा।

उन्होंने हिन्दू मुस्लिम दोनों धर्मो को आईना दिखाने का प्रयास किया है । तीर्थ यात्राओं पर व्यंग करते हुये कहते है – "अंगर यह धारणा सत्य होती तो मानव जाति का कल्याण होता समाज में मानवता, समानता, बधुत्व, एकता का भाव दिखाई देता । लेकिन ऐसा कुछ भी दिखाई नहीं देता है।"12

"का मथुरा का द्वारिका, का कासी हरिद्वार।

'रविदास' खोज दिल अपना, तउ मिलिया दिल द्वार।।"

इस प्रकार तीर्थ यात्रा को व्यर्थ कहते हुए अपने हद्य में ही तीर्थ यात्रा की अनुभूति करने को कहते है।

Copyright © 2020 Authors

"वेद, शास्त्र पुराणों का विरोध किया है।" संत रविदास ने वेद, शास्त्र, पुराणों आदि का विरोध किया है। ये सभी ग्रंथ समाज में विषमता, वर्ग–भेद निर्माण करने में सहायक है। इसी कारण तत्कालीन समाज वर्गो में विभक्त था। धार्मिक पंडितो ने अपने स्वार्थ के लिए अनेक कुप्रथाएं, रूढ़ियो का प्रचलन किया था।" 13

1 चारिव वेद किया खंडौति

जन रैदास करे दंडौति।।

2 जग में वेद वैद मानी जै।

इस प्रकार वेद पुराण को भी नकारा है।

निष्कर्ष –

सदियों से चली आ रही कुप्रथा, रूढ़ियों जिसमें अवतारवाद, बहुदेववाद, मूर्ति–पूजा, वेषभूषा, हिन्दू–मुस्लिम, साम्प्रदायिकता, अंधविश्वास इन सब का विरोध सर्वाधिक संतो ने किया है। संत रविदास कवि, संत, भक्त के साथ समाज सुधारक थे। जिन्होंने अपने वाणी से जीवन प्रर्यन्त समाज में समाजिक चेतना का संचार करते रहे और लोगों को जगाते रहे। संत रविदास की सादगी, सत्यनिष्ठा, कर्मठता, कल्पनाषीलता, सामाजिक चेतना ऐसे गुण है जो अन्य लोगों को प्रेरणा देता है। संत रविदास कबीर जैसे मुखर सामाजिक सुधारक नहीं थे लेकिन रविदास सधी हुई वाणी में सामाजिक चेतना का प्रसार करते रहे।

समाज के प्रति रविदास की जागरूक मानसिकता ही उनकी समाजिक चेतना है। इनकी रचनाओं की ओर दृष्टि करने से यह सहज अनुभव होता है की समाजिक सरोकार, लोकमंगल की भावना एक महत्वपूर्ण पक्ष है। वे जीवन्त पर्यन्त अपने सिद्धांतो पर चलते रहें। समाजिक चेतना के लिए सभी वर्गो को एक धागे में पिरोने का अथक प्रयास करते रहे। वे कहते रहे –

"सत संगत मिल रहिए माधवे"

समाजिक चेतना के साथ ही आर्थिक, राजनीतिक सुधार के लिए भी लोगों को जगाते रहे। संतो के काव्य में विद्रोह का भाव जाग जाता है जो तत्कालीन समाजिक विषमता, वर्ण–व्यवस्था, जाति–व्यवस्था के प्रति था। संतो ने समाजिक बदलाव के लिए विद्रोह किया था। उनका विद्रोह का भाव उनके काव्य का एक अंग है संत रविदास सौम्य होते हुए भी एक महान समन्वयवादी समाजिक चिंतक थे। जिन्होंने तत्कालीन समाजिक परिवेष को बदलने हेतु प्रयत्न करते रहे।

संदर्भ सूची

1 मेहरा, डॉ. रमेश, गुरू रविदास दर्शन, तक्षशिला प्रकाशन संस्करण 2008 पृ. 15

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 2 January–December 2020

2 सांसिया, डॉ जीवन, मध्यकालीन संत परम्परा एवं रैदास साधना प्रकाशन कानपुर, संस्करण 2014 पृ. 01

3 वर्मा, डॉ. रामकुमार, हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास संस्करण, 2010 , लोकभारती प्रकाशन पृ. 215

4 मेहरा, डॉ. रमेश, गुरू रविदास दर्शन, तक्षशिला प्रकाशन संस्करण 2008 पृ. 16

5 काबले, डॉ. प्रवीण, निर्गुण काव्य में सामाजिक चेतना और संत रविदास का योगदान, अमन प्रकाशन कानपुर, सस्करण 2013 पृ.164

6 डॉ. अपर्णा पाटील, डॉ विजय कुमार वैराते, वैष्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में संत साहित्य की प्रासंगिकता, अतुल प्रकाशन पृ. 88

7 डॉ. अपर्णा पाटील, डॉ विजय कुमार वैराते, वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में संत साहित्य की प्रासंगिकता, अतुल प्रकाशन पृ 87

8 काबले, डॉ. प्रवीण, निर्गुण काव्य में सामाजिक चेतना और संत रविदास का योगदान, अमन प्रकाशन कानपुर, सस्करण 2013 पृ. 176

9 सांसिया, डॉ जीवन, मध्यकालीन संत परम्परा एवं रैदास साधना प्रकाशन कानपुर, संस्करण 2014 पृ. 126

10 काबले, डॉ. प्रवीण, निर्गुण काव्य में सामाजिक चेतना और संत रविदास का योगदान, अमन प्रकाशन कानपुर, सस्करण 2013 पृ. 176

11 मेहरा, डॉ. रमेश, गुरू रविदास दर्शन, तक्षशिला प्रकाशन संस्करण 2008 पृ. 112

12 काबले, डॉ. प्रवीण, निर्गुण काव्य में सामाजिक चेतना और संत रविदास का योगदान, अमन प्रकाशन कानपुर, सस्करण 2013 पृ. 178

13 काबले, डॉ. प्रवीण, निर्गुण काव्य में सामाजिक चेतना और संत रविदास का योगदान, अमन प्रकाशन कानपुर, सस्करण 2013 पृ. 179

Copyright © 2020 Authors